ROJGAR With Ankit

हिन्दी [Lecture-2]

:- वर्णमाला -:

* कुल स्वरों के प्रकार - 03

(i) ह्रस्व स्वर :- "जिन वर्णों का उच्चारण करने ~~समय~~ पर कम समय लगता है उसे ह्रस्व स्वर कहते है।"

→ ④ - (अ, इ, उ, ऋ) (एकमात्रिक)

(ii) दीर्घ स्वर :- "जिन वर्णों का उच्चारण करते समय ह्रस्व की अपेक्षा अधिक समय लगता है।"

→ ⑦ - (आ, ई, ऊ, ए ऐ, ओ औ) (द्विमात्रिक)

(iii) प्लुत स्वर :- "जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व और दीर्घ की अपेक्षा अधिक समय लगता है।"

→ मंत्रो का उच्चारण, ओम की ध्वनि

ROJGAR With Ankit

* जीह्व के आधार पर स्वर - 03

① अग्र स्वर - इ, ई, ए ऐ

② मध्य स्वर - अ

③ पश्च स्वर - आ, उ, ऊ, ओ, औ (ऑ)

* उत्पत्ति के आधार पर स्वर - 02

① मूल स्वर ⇒ जिन स्वरों का निर्माण एक खण्ड के द्वारा होता है।
इनकी संख्या चार होती है।
(अ, इ, उ, ऋ)

(ii) सन्धि स्वर ⇒ जिन स्वरों का निर्माण दो खण्ड द्वारा होता है।
→ ये दो प्रकार के होते हैं।

(a) सजातीय स्वर - समान जाति के योग से बने वर्ण सजातीय स्वर कहते हैं।
→ आ - अ + अ, ई - इ + इ, ऊ - उ + उ
इन स्वरों को मूलदीर्घ स्वर भी कहते हैं।

(b) विजातीय स्वर ⇒ जिन स्वरों का निर्माण विभिन्न जाति के योग से हो।
इनकी संख्या 4 होती है।

ए - अ + इ
ऐ - अ + ए
] → कण्ठ तालव्य स्वर भी कहते हैं।

ओ - अ + उ
औ - अ + ओ
] → कण्ठ ओष्ठीय स्वर

* इन्हे ही संयुक्त स्वर के नाम से जाना जाता है।

ROJGAR With Ankit

उच्चारण या ओष्ठ के आधार पर स्वर - 02

(i) आवृत्तमुखी स्वर - "होंठ गोलाकार अथवा वृत्तमुखी नहीं होते।"
[अ, आ, इ, ई, ए, ऐ]

(ii) वृत्तमुखी - "होंठ गोलाकार अथवा वृत्तमुखी होते हैं।"
[उ, ऊ, ओ, औ]

मुख खुलने के आधार पर या मुख विवर के आधार पर - 04

(i) संवृत स्वर ⇒ "(मुख बन्द रहता है।)"
↳ (इ, ई, उ, ऊ)

(ii) अर्द्धसंवृत स्वर ⇒ "(मुख थोड़ा खुलता है।)"
↳ (ए, ओ)

(iii) विवृत स्वर ⇒ सबसे अधिक मुख खुलता है।
↳ (आ)

(iv) अर्द्धविवृत स्वर ⇒ विवृत की तुलना में थोड़ा कम मुख खुलता है।
↳ अ, ऐ, औ, (ऑ)

ROJGAR With Ankit

* अर्द्ध स्वर - य, व (डॉ भोलानाथ तिवारी)
* प्राकृतिक स्वर - अ, इ, उ
* कण्ठ्य स्वर - अ, आ
* तालुव्य स्वर - इ, ई
* मूर्धन्य स्वर - ऋ
* ओष्ठ्य स्वर - उ, ऊ
* कण्ठ ओष्ठ्य स्वर - ओ, औ (ऑ)
* कण्ठ तालुव्य स्वर - ए, ऐ
* उदासीन स्वर - अ
* अपभ्रंश में कितने स्वर
* मौजूद है - 08 (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ)